786
H 219

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1243
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 786

स्वराज्य पुकार

✻ अथवा ✻

देश को चेतावनी

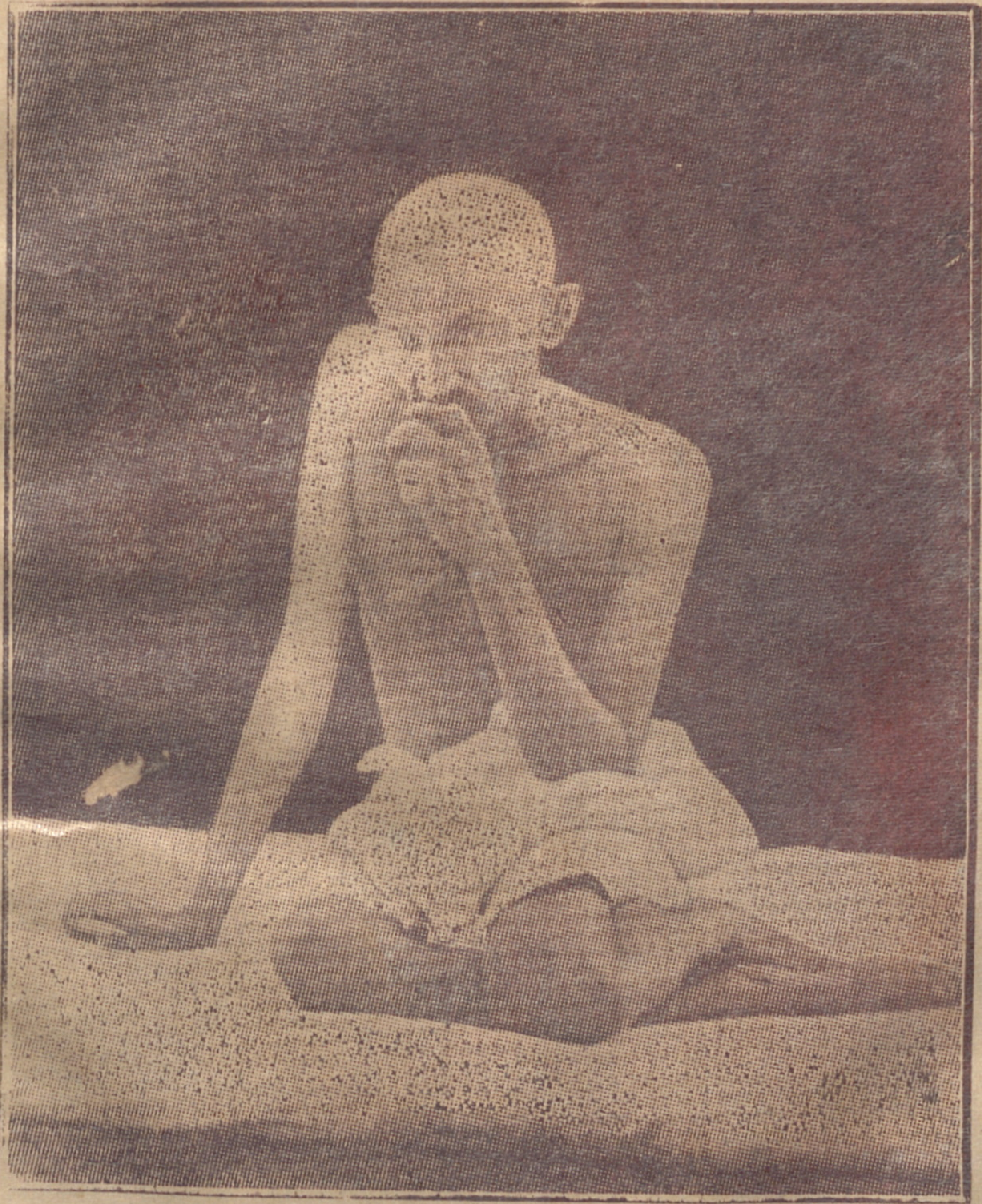

भारत के हृदय सम्राट

महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी

Bhatt Fine Printing Works Gannagali, Lucknow.

891·431 S25S

नौजवानों की तमन्ना

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते ॥

हमको कमजोर समझ बैठे हमारे दुश्मन ।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

जुल्म करती है हिन्द पर नौकरशाही ।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते ॥

दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवां मर्दी से।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते ॥

जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायें रौनक ।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते ॥

मातृ-भूमी के लिये जान निछावर कर दें।
सबक भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते ॥

हैं तो ना चीज़ मगर इतनी जुरत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते ॥

—०—

सब प्रकार की पुस्तकें मिलने का पताः—
कालताप्रसाद दीक्षित चौक इलाहाबाद ।

कौआली

बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले।

मिलकर हिन्दू मुसलिम आज, बोलो जय गांधी महराज,
आरत भारत के सरताज, असहयोग चलाने वाले।
बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले॥

कर दो चरखे की भरमार, घर घर दर दर हाट बजार,
खद्दर कर लो अब तैयार, चेतो भाई भूले भाले।
बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले।

मन मन मैनचेस्टर पछतात, लंकाशायर उजड़ा जात,
खद्दर इन्हें कर दिया मात, रोते मौज उड़ाने वाले।
बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले॥

सारा यूरुप अब थर्रात, भूली सबै चौकड़ी जात,
खद्दर मचा दिया उत्पात, हारे चतुर कहाने वाले।
बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले॥

लागत एको ना अब घात, बैठे धरे हाथ पर हाथ,
छिनमें निकल दिवाला जात, गोरे चौंक पड़े मतवाले।
बोलो जै गांधी महराज, चरखा चक्र चलाने वाले॥

—०—

एक साथ सब मिल कर गावो,
प्यारा भारत देश हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इसकी शान न जाने पावे,
चाहे जान भले ही जावे ।
विश्व विजय करके दिखलावे,
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

—:०:—

धुन लावनी

कहती है रैयत सुनो सभी अब दिल में यही समाना है ।
स्वराज लिये बिन चैन नहीं अब मरना है मर जाना है ॥
गांधी की आंधी पृथिवी भर में बिजली सी चमकाना है ।
गांधी बैठे जेल के अन्दर जानता सकल जमाना है ॥
गुन गांधी का क्या मैं बरनूं गांधी महात्मा दाना है ।
उपदेश दिया है देश के अन्दर देश उसी को माना हैं ॥
पंडित जवाहिर लाल नेहरू मर्दों में मर्दाना है ।
सरकार का अत्याचार देख कर जरा नहीं भय माना है ॥
कहते मोती लाल नेहरू शहीद बनने जाना है ।
हिन्दू मुसल्मां दोनों मिल कर अपना देश बचाना है ॥

—:०:—

राष्ट्रीय झण्डा

झण्डा ऊँचा रहे हमारा।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला,
मातृ-भूमि का तन मन सारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

स्वतंत्रता के भीषण रण में,
लखकर बढ़े जोश क्षण क्षण में।
काँपे शत्रु देख कर मन मे,
मिट जावे भय संकट सारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

इस झण्डे के नीचे निर्भय,
लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय,
स्वतन्त्रता हो ध्येय हमारा ॥
झण्डा ऊँचा रहे हमारा ॥

आवो प्यारे वीरो आवो,
देश धर्म पर बलि बलि जावो।

(८)

जिनहें क़तल, या क़तल-इरादा, सजा मिली हो, उन्हें न छोड़ें ।
बक़ाया क़ैदी पोलीटिकल सब, तुरंत साहब ! छुड़ाना होगा ॥

(६)

उठा लिए जांय राजनैतिक जो मामले चल रहे मुलक पर ।
जो इकसौचौबिस दफा अलिफ़ है, उसेतो बिल्कुल मिटाना होगा ॥

(१०)

अठारह का ऐक्ट रेगुलेशन, तथा दफा ऐसी सब उठा कर ।
जलावतन सब हमारे भाई वतन में साहब ! बुलाना होगा ॥

(११)

मुहकमा खुफिया-पुलिस उठादो, या करदो उसको प्रजा के ताबे ।
हमें भी बन्दूक और पिस्तौल, बरा हिफ़ाजत दिलाना होगा ॥

—:०:—

उठो नौजवानों

भारत के नौजवानो ! मैदान-ए-जंग आओ ।
बन देश-प्रेमी अपना, जीवन सफल बनाओ ॥
वे वीर त्यागी अपना, कर्तव्य कर रहे हैं ।
है राह उनकी सीधी, उस पर कदम बढ़ाओ ॥
है कौन शक्ति ऐसी, जो तुमको रोक लेगी ।
गर एक साथ होकर बल अपना तुम दिखाओ ॥
भय त्याग दो अभय बन, स्वातन्त्र-जंग छेड़ो ।
भू मां को अपनी वीरो ! बंधन से तुम छुड़ाओ ॥

—:०:—

महात्माजी की ग्यारह शर्तें

महात्मा गांधी की ग्यारह शर्तें अमल में लाकर दिखाना होगा।
प्रजाके आगे तुझे सितमगर ! सर अपना अबतो झुकाना होगा ॥

(१)

नशीली चीजें शराब, गांजा, अफीम आदिक जो बुद्धि हरतीं।
मिटा के इनकी ख़रीद-बिक्री, दुकानें सारी उठाना होगा ॥

(२)

हमारे सिक्के की दर को साहब ! घटा-बढ़ा करके लूटते हो ॥
अब एक शिल्लिंग चार पेनी, ही भाव उसका बनाना होगा।

(३)

लगान आधा करो ज़मीं का, किसान जिससे ज़रा सुखी हों।
मुहकमा इसका हमारी कौंसिल के तावे तुमको रखाना होगा ॥

(४)

फिजूल-खर्ची बिला ज़रूरत, जो फौज पर हो रही हमारी।
अधिक नहीं गर तो आधा उसको, ज़रूर साहब ! घटाना होगा ॥

(५)

बड़े-बड़े, भारी-भारी वेतन, डकारते हैं जो आला अफ़सर ॥
उसे मुआफिक लगान आधा या उससे भी कम कराना होगा।

(६)

स्वदेशी कपड़े करें तरक्की, विदेशी कपड़े न आने पावें।
विदेशी कपड़ों पै और महसूल, ज्यादा तुमको लगाना होगा ॥

(७)

समुद्र-तट का जहाजी वाणिज, न हाथ में हो विदेशियों के।
उसे हमारे महाजनों के अधीन रख कर चलाना होगा ॥

बन्देमातरम्

—:o:—

जय ज्ञान गुण भण्डार जगदाधार श्री जगदीश्वरम् ।
जय शारदा सदबुद्धिदा जय जयति बन्देमातरम् ॥
जय जय तिलक जिनने स्वदेशी की समस्या छेड़ दी ।
गांधी महात्मा धन्य हैं जिनने दुहाई फेर दी ॥
यदि हम स्वदेशी माल को शीघ्र नहीं अपनायेंगे ।
कंगाल हो मर जांयगे संसार से मिट जांयगे ॥
झगड़ा बिदेशी का तजो निज देश पर बलिदान हो ।
प्रेमी स्वदेशी के बनो तो देश का उत्थान हो ॥
चरखे चले घर घर स्वदेशी वस्त्र सब तैयार हो ।
आशा पराई छोड़ दो तो देश का कल्याण हो ॥
पलटा जमाना जब हिन्द का सूर्य गांधी सा आखिला ।
अपनी पराई सोचने का कुछ हमें मौका मिला ॥
होवे रुई इस देश में कपड़े बनें परदेश में ।
आश्चर्य क्या जीवन हमारा जो कटे फिर क्लेश में ॥
गाढ़ा पहिन कर चित्त में मलमल उसे तुम मान लो ।
निज देश ही के नाम पर होना स्वदेशी ठानलो ॥
पाव भर का थान है तन्जेब बन कर आ गई ।
देने पड़ेगे दाम पूरे हैं छदामों की नहीं ॥

—:o:—

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 786
Date 21.12.71
GOVT. OF INDIA

वन्देमातरम्

स्वदेशी गान

प्रकाशक

उमाशंकर दीक्षित

चौक इलाहाबाद

सन् १९३०

प्रथम बार १०००] [मूल्य)॥

मुद्रक—पं० काशीनाथ बाजपेयी, विजय प्रेस, प्रयाग ,